Hkkjr&usiky jktuhfrd lEcU/k%
phu dh fons'k uhfr ds lUnHkZ esa

n;kyckx f'k{k.k laLFkku ¼MhEM fo'ofo|ky;½

n;kyckx vkxjk

ih,p0Mh0 jktuhfr 'kkL= dh mikf/k gsrq

'kks/k izcU/k dh :ijs[kk

2013

संकाय प्रमुख	विभागाध्यक्ष
izks0 lathLo Lokeh	izks0 if.kek tSu lekt'kkL= ,oa jktuhfr 'kkL=

funsf'kdk	'kks/kkFkhZ
Mk0 vatw 'kekZ lekt 'kkL= ,oa jktuhfr 'kkL= foHkkx	vt; flag

n;kyckx ,tqds'kuy bULVhV~;wV ¼MhEM ;wfuoflZVh½

n;kyckx] vkxjk

iLrkouk

भारत और नेपाल भौगोलिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और आर्थिक रूप से एक दूसरे से नजदीकी से सम्बन्धित है। नेपाल की सीमा भारत के साथ करीब 2000 कि0मी0 की है। नेपाल के उत्तर में चीन है। चीन और भारत जैसे दो बड़े देशों के बीच एक छोटे देश के रूप में स्थित नेपाल की स्थिति एक (बफर स्टेट) अन्तस्थ राज्य जैसी है। नेपाल एक स्वतंत्र राज्य है और इसकी अन्तस्थ स्थित के कारण इसकी विदेश नीति तथा रक्षा का भारत से गहरा सम्बन्ध है। नेपाल व भारत के बीच का अधिकतर इलाका मैदानी है। इसलिए नेपाल और भारत के लोगों को आपसी व्यापार करने में सुविधा होती है। नेपाल व भारत के लोगों के बीच सांस्कृतिक एवं सामाजिक एकरूपता पायी जाती है।

भारत की सुरक्षा नेपाल के साथ जुड़ी हुई है। भारत और नेपाल की सीमा खास तौर पर, नए चीन के उभर कर आने के बाद भारत की सुरक्षा नेपाल के साथ और अधिक प्रभावित हो रही है।

आधुनिक नेपाल के निर्माता पृथ्वी नारायण शाह ने नेपाल की विदेश नीति निर्मित करते हुए कहा है कि, ”यह देश दो चट्टानों के बीच खिले हुए फूल के समान है। वास्तव में ऐतिहासिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक दृष्टिकोण से निकटस्थ देश सौहार्दपूर्ण सम्बन्धों के सूत्र सदैव एक समान व पास्परिक राजनीतिक व सामरिक हितों की अन्तकरण से प्रभावित होते रहे हैं जिनकी पृष्ठभूमि में राष्ट्रीय सुरक्षा ही रही है।

भारतीय स्वाधीनता के पश्चात् भी भारत ने समानता के सिद्धान्त के आधार पर नेपाल से अपने मैत्री सम्बन्धों को प्राथमिकता देते हुए नेपाल के आर्थिक पुर्ननिर्माण में पर्याप्त सहायता के परिणामस्वरूप नेपाल के तत्कालीन शासक वर्ग राजाओं ने सन् 1923 की सन्धि को स्थितिगत परिवर्तन लाते हुए इसे सन् 1950 को शान्ति और मैत्री सन्धि का रूप प्रदान किया क्योंकि दोनों

देश हिमालय के पार बदलते राजनीतिक संदर्भ एवं चीन में साम्यवादी शक्ति के अभ्युदय के परिणामों तथा तिब्बत में उसकी गतिविधियों से सुपरिचित थे।

शांति और मैत्री सन्धि 1950 में भारत इस बात के लिए इच्छुक था कि प्रभुसत्ता सम्पन्न समानता तथा अच्छे पड़ौसी के सम्बन्धों के आधार पर भारत नेपाल सम्बन्धों की पुनः व्याख्या की जाएं। लगभग नौ मास की कूटनीतिक गतिविधियों और आपसी बातचीत के परिणामस्वरूप 31 जुलाई 1950 को भारत और नेपाल ने शांति और मित्रता की सन्धि पर हस्ताक्षर किए। इस सन्धि में यह स्पष्ट प्रावधान किया गया था कि दोनों देशों में से कोई भी देश दूसरे देश पर किसी विदेशी आक्रमण या उसकी सुरक्षा के लिए उत्पन्न संकट को सहन नहीं करेगा। भारत और नेपाल ने एक दूसरे को वचन दिया कि किसी तीसरे (अन्य) देश की ओर से उत्पन्न संकट या धमकी का प्रभावी सामना करने तथा सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पारस्परिक सहयोग करेंगे।

31 जुलाई 1950 को भारत और नेपाल ने अन्य संधि पर भी हस्ताक्षर किए। इस व्यापार और वाणिज्य सन्धि से भारत–नेपाल सम्बन्ध और भी प्रगाण हुए और यही से भारत–नेपाल आर्थिक सहयोग का सुखद युग आरम्भ हुआ। यद्यपि सन् 1950–51 में राजाशाही का नेपाल में जबरदस्त विरोध होने पर भारत ने पूर्ण समर्थन किया था तथापि नेपाल के आंतरिक अस्थिर परिस्थितियों के कारण भारत व नेपाल के सम्बन्धों में कटुता उत्पन्न होने लगी। तत्कालीन नेपाल नरेश महेन्द्र एवं प्रधानमंत्री वी0पी0 कोइराला के मध्य उत्पन्न संघर्ष की स्थिति तथा नेपाल द्वारा भारत विरोधी प्रचार युद्ध के परिणाम स्वरूप भारत – नेपाल सम्बन्ध काफी बिगड़ गये।

11–12 जनवरी 1961 को नेपाल के विदेशमंत्री डॉ0 तुलसी गिरी की नई दिल्ली यात्रा से भारत–नेपाल के सम्बन्धों में सौहार्दपूर्ण वातावरण में वृद्धि हुयी।

किन्तु राजा महेन्द्र सिंह की अगस्त 1961 में नई दिल्ली यात्रा के पश्चात् सितम्बर 1961 में चीन यात्रा के समय चीन से सम्पन्न समझौतों के परिणाम स्वरूप भारत–नेपाल सम्बन्धों में पुनः गतिरोध उत्पन्न हो गया।

सन् 1962 में भारत–चीन युद्ध के समय नेपाल ने तटस्थता की नीति का अनुसरण करके कोई भी भारत विरोधी कदम नहीं उठाया। लेकिन भारत की चेतावनी देने के बाद भी नेपाल ने काठमांडू–ल्हासा मार्ग बनवाने के लिए चीन से समझौता करके भारत के लिए खतरा उत्पन्न किया। परन्तु भारत ने इसे पसन्द नहीं किया। सन् 1962 के बाद भारत–नेपाल सम्बन्धों में सुधार होने लगा।

सन् 1968–69 में भारत ने नेपाल को 14.5 करोड़ रू0 की सहायता प्रदान की जो नेपाल को मिलने वाली नेपाल सहायता का 50 प्रतिशत थी।

सन् 1970–71 में जहाँ एक ओर भारत सरकार द्वारा 37388 लाख रू0 त्रिशूल हाइड्रोइलेक्ट्रिक व गण्डक परियोजनाओं हेतु व्यय किए गये, इतनी अधिक सहायता राशि प्रदान कर भारत द्वारा उसकी परियोजनाओं को पूर्ण करने का सराहनीय प्रयास किया।

1972 से आरम्भ में महाराजा महेन्द्र सिंह के निधन के पश्चात् उनके पुत्र नरेश वीरेन्द्र नए नेपाल नरेश बने। उनके सत्ता में आते ही नेपाल ने भारत के साथ सामान्य सम्बन्धों की स्थापना के लिए उपाय आरम्भ किए।

सन् 1974 में भारत व नेपाल के मध्य सिंचाई, विद्युत संचार,उद्योग व कृषि आदि क्षेत्रों में सहयोग हेतु समझौते सम्पन्न हुए। सन् 1974 में ही भारत व सत्तारूढ़ जनता सरकार के शासन काल में भी नेपाल के साथ सम्बन्धों को सुधारने का प्रयास तो हुआ ही साथ ही 17 मार्च 1978 को दोनों देशों के मध्य एक व्यापार सन्धि, एक पृथक पारगमन सन्धि और पारस्परिक अवैधानिक व्यापार को रोकने के लिए एक सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर सम्पन्न हुए

जिसके अन्तर्गत नेपाल को आपसी व्यापार में अनेक शुल्क सम्बन्धी सुविधाएं प्राप्त हुई।

1980 में श्रीमती इंदिरा गांधी के पुनः सत्ता में आने पर भारत और नेपाल सम्बन्ध और भी सुदृढ़ हुए। 1980–81 में नेपाल ने अपने संविधान में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए गये तथा दोनों देशों के सम्बन्धों को समानता, आपसी विश्वास तथा पारस्परिकता पर आधारित करने के लिए पूर्ण प्रयास किए गये।

31 मई 1985 में सार्क सम्मेलन में दोनों देशों के विदेश मंत्रियों के बीच द्विपक्षीय मामलों पर विचार–विमर्श किया। नवम्बर 1986 में बंगलौर में आयोजित सार्क सम्मेलन में नेपाल ने भी भाग लिया। सम्मेलन की अध्यक्षता राजीव गांधी ने की। सार्क का सचिवालय उन्होंने काठमाण्डू में स्थापित किया। 1987 का सार्क सम्मेलन काठमाण्डू में आयोजित हुआ जिससे दोनों देशों की नजदीकियाँ बढ़ी।

महाराजा वीरेन्द्र ने जनता की इच्छा को स्वीकार करके निर्दलीय पंचायत व्यवस्था को समाप्त कर दिया। उन्होंने शासन की नई पद्धति को स्वीकार किया जिसके अनुसार वह राज्यध्यक्ष तो बने रहेगें, परन्तु वास्तविक शासन का उत्तरदायित्व एक मंत्रिमण्डल का होगा।

दोनों देशों में 1990 के दशक में आरम्भ हुए उदारीकरण के परिणामस्वरूप भारत–नेपाल को आर्थिक सम्बन्धों का लाभ हुआ। 1991 की व्यापार और परिवहन सन्धियों और उनमें 1993 में हुए संशोधनों से भी सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए।

1992 के पश्चात अनेक कार्यक्रमों के द्वारा नेपाल ने आर्थिक विकास में भारत की प्रतिबद्धता को व्यवहारिक रूप दिया गया। इनमें जयानगर रेलवे के स्तर को नए रेल इंजनों और सवारी डिब्बों को नेपाल को आपूर्ति। यह कार्य 1994–95 में सम्पन्न हो गया। उसी वर्ष काठमाण्डू नगरपालिका को भारत द्वारा नगर की सफाई के उपकरण उपलब्ध भी कराए गए।

फरवरी 1996 में नेपाली प्रधानमंत्री देऊबा की भारत यात्रा के दौरान महाकाली नदी के विकास के सम्बन्ध में एक सन्धि पर हस्ताक्षर किए गये। पारस्परिक लाभ के लिए नदियों के विकास कार्य में यह एक महत्वपूर्ण कदम था। सीमा के संतोषजनक निर्धारण के लिए भारत और नेपाल ने संयुक्त तकनीकी सीमा आयोग के माध्यम से कार्य करना आरम्भ कर दिया। भारत ने नेपाल के प्रति स्थायी मैत्री का वचन दिया।

अगस्त 2000 में नेपाली प्रधानमंत्री श्री गिरिजा प्रसाद कोईराला ने भारत की यात्रा की तथा प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी तथा अन्य भारतीय नेताओं से विभिन्न मुद्दों पर विचार–विमर्श किया। भारत–नेपाल सीमा, अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद, पार–सीमा आतंकवाद पर वार्तालाप हुआ तथा आतंकवाद की समाप्ति के लिए उपायों पर गहन विचार किया गया।

अगस्त 2001 में तत्कालीन विदेश मंत्री जसवन्त सिंह ने नेपाल की यात्रा की तथा वहाँ पर नेपाल कर मुक्ति के मुद्दे को गम्भीरता से उठाया क्योंकि नेपाल चीन से माल मँगाकर भारत के बाजारों को भर रहा था तथा भारतीय बाजार में चीन का माल खपत होने से भारतीय बाजारों को खतरा उत्पन्न हो गया था।

1 जून 2001 को राजरबार के सदस्यों की हत्या के बाद अगले ही दिन दीपेन्द्र को महाराजा घोषित किया गया। 3 जून को दीपेन्द्र के निधन के बाद महाराजा ज्ञानेन्द्र नेपाल के महाराजा बने। इस प्रकार नेपाल में 4 दिन में 3 राजा हुए। 4 जून 2001 को ज्ञानेन्द्र वीर विक्रम शाह राजा के सिंहासन पर बैठे। कुछ बुद्धजीवियों लोगों का कहना है कि राजा वीरेन्द्र की परिवार की हत्या ज्ञानेन्द्र एवं उसके पुत्र पारस ने करायी जो चीन समर्पित माओवादियों के सम्पर्क में थे, भारत में भी नेपाल की सीमा से लगे राज्य आज भी माओवादी आन्दोलन से प्रभावित हैं।

30 मई 2003 को गिरजा प्रसाद कोईराला के त्यागपत्र के उपरान्त एक और राजतंत्र समर्थक राजनीतिज्ञ सूर्य बहादुर थापा को प्रधानमंत्री बना दिया गया। राजनीतिक दलों के विरोध के बावजूद थापा की सरकार 11 माह तक राजा की इच्छा पर चलती रही।

जून 2004 में थापा के हटने के बाद शमशेर बहादुर देउबा को प्रधानमंत्री बना दिया गया। नेपाल में 1 फरवरी 2005 को राजनैतिक परिवर्तन आया तब एक राजनीतिक संकट उत्पन्न हुआ जब शेर बहादुर देउबा की सरकार को राजशाही ने बर्खास्त कर दिया।

21 अप्रैल 2006 को महाराजा ज्ञानेन्द्र को राष्ट्र के नाम अपने सम्बोधन में सत्ता, जनता को सौंपने का ऐलान किया। 27 अप्रैल 2006 को 84 वर्षीय कोइराला को पांचवी बार प्रधानमंत्री पद सौंपा गया।

15 जनवरी 2007 में नेपाल के इतिहास में महत्वपूर्ण दिन था। इस दिन नेपाल की अंतरिम संसद की पहली बैठक सम्पन्न हुई। संसद की पहली बैठक में गृहमंत्री कृष्ण प्रसाद सितौला ने प्रधानमंत्री की ओर से अंतरिम संविधान को विचारार्थ एवं स्वीकृति हेतु प्रस्तुत किया गया।

नेपाल के प्रधानमंत्री प्रचण्ड 2008 में भारत आए। लोकतंत्र की स्थापना के साथ ही उन्होंने दोनों देशों के द्विपक्षीय सम्बन्धों पर जोर दिया। नेपाल में लोकतंत्र की स्थापना माओवादी नेता पुष्प कमल दहल (प्रचण्ड) की जीत से प्रारम्भ हुई। 18 अगस्त 2008 को प्रचण्ड को प्रधानमंत्री, रामबरन यादव को राष्ट्रपति एवं परमानंद झा को उपराष्ट्रपति चुना गया।

9–18 अगस्त 2009 को नेपाल के प्रधानमंत्री माधव कुमार नेपाल पांच दिवसीय भारत यात्रा पर आएं। इस यात्रा से दोनों देशों के सम्बन्धों में एक नया मोड़ आया। 20 अक्टूबर 2009 को भारत और नेपाल के आगामी सात वर्षों के लिए नई द्विपक्षीय व्यापार सन्धि पर हस्ताक्षर किए।

21 अप्रैल 2011 के दूसरे पखवाड़े में नेपाल की तीन दिवसीय यात्रा पर गये विदेशमंत्री एस0एम0 कृष्णा माओवादी गतिविधियों के उदय एवं कूटनीतिज्ञों पर हमले और संयुक्त प्रयासों को प्रभावित करने के लिए अपना पक्ष रखा।

नेपाल संसद का कार्यकाल समाप्त होने के बाद नवम्बर 2012 में चुनाव होने थे लेकिन राजनीतिक मतभेद होने के कारण उन्हें रद्द कर दिया गया था। मई 2012 में प्रधानमंत्री भट्टारायी ने संसद भवन का चुनाव कराने की घोषणा की।

मार्च 2013 में लम्बे राजनैतिक गतिरोध के बाद नेपाल के 4 बड़े राजनीतिक दलों (नेपली कांग्रेस, यूनाइटेड कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल(माओवादी), कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल (यूनाइटेड मार्क्सिस्ट लेनिनिस्ट) व यूनाइटेड डेमोक्रेटिक मधेशी फ्रंट) ने यह सहमति बनायी कि सरकार का नेतृत्व मुख्य न्यायाधीश खिल राज रेग्मी को सौंप दिया जाये। इसी के परिणामस्वरूप 14 मई 2013 को राष्ट्रपति रामबरन यादव ने खिल राज रेग्मी को प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलायी।

चीन, नेपाल में साम्यवादी प्रभाव का प्रसार करना चाहता है। जबकि भारत, नेपाल की आर्थिक सांस्कृतिक और सामरिक स्थिति को सुदृढ़ करना चाहता है। इस समय भारत–नेपाल सम्बन्धों को सबसे ज्यादा प्रभावित करने वाला मुद्दा सुरक्षा का है। भारत की जनता एवं शासक नेपाल की सार्वभौमिकता क्षेत्रीय एवं अखण्डता और राष्ट्रीयता का आदर एवं सम्मान करती आ रही है। भारत यह अच्छी तरह जानता है कि अगर नेपाल एक आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से सशक्त और स्थिर राष्ट्र के रूप में आगे बढ़ता है तो यह न केवल नेपाल के हित में होगा बल्कि भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा के हित में होगा। अगर नेपाल की भूमि का प्रयोग भारत विरोधी तत्व करते हैं तो इसके दीर्घकालिक परिणाम न केवल भारत की सुरक्षा पर प्रश्न

चिन्ह अंकित करते हैं बल्कि नेपाल की स्थिरता भी खतरे में डाल सकते हैं। वर्तमान में भारत नेपाल सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण हैं।

leL;k dFku

भारत और नेपाल दोनों पड़ोसी देश हैं। ये दोनों देश अन्र्तराष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नेपाल, भारत और चीन के समान–दूरी के सिद्धान्त के आधार पर सम्बन्ध विकसित करना चाहता है जिससे चीन को भी संतुष्ट किया जा सके, परन्तु भारत समान–दूरी के सिद्धान्त को नहीं मानता, वह तो नेपाल के साथ विशिष्ट सम्बन्ध चाहता है। उसका कहना है नेपाल एक आंतरिक देश है अतः उसके साथ भारत के विशिष्ट सम्बन्ध स्वभाविक है। नेपाल के साथ 1950 में की गई संधि इस समय भारत नेपाल के सम्बन्धों में असहमति का एकमात्र मुद्‌दा है। संधि में एक बात यह भी कही गई है कि नेपाल यदि हथियारों का कोई आयात करेगा तो भारत को सूचित करेगा। मूलतः यह प्रावधान इसलिए है कि नेपाल को हथियारों की आवश्यकताओं की पूर्ति भारत के पास से की जा सके और उसे अपनी विदेशी मुद्रा इस पर खर्च न करनी पड़े। वर्ष 2000 से नेपाल मादक पदार्थों की तस्करी और भारत विरोधी तत्वों का अड्‌डा बना हुआ है। अनेक बार ये तत्व अधिक सक्रिय हो जाते हैं। भारत ने इन समस्याओं को हल करने के लिए कई कदम उठाये हैं किन्तु यह समस्याएं निरन्तर चली आ रही है। साथ ही नेपाल ने भारत के विरोधी देशों जैसे पाकिस्तान, चीन से हाथ मिलाया है जिसके परिणामस्वरूप भारत और नेपाल के सम्बन्धों में दूरी देखी गई है।

2000 के बाद चीन की भूमिका एवं भारत–नेपाल सम्बन्धों में आये परिवर्तन का अध्ययन शोध की मुख्य समस्या है।

v/;;u dk egRo

नेपाल, भारत का पड़ोसी देश है। जो कि भारत की सुरक्षा की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है, इसलिए भारत को नेपाल से और चीन से अपनी सीमा की रक्षा करने के लिए नेपाल के साथ सम्बन्ध बनाये रखना आवश्यक है। साथ ही साथ यह भी ध्यान रखने के आवश्यकता है कि नेपाल का झुकाव चीन की ओर बढ़ता जा रहा है, क्योंकि चीन नेपाल की भूमि का प्रयोग भारत के विरूद्ध युद्ध के लिये कर सकता है। नए चीन के उभरने के बाद भारत को नेपाल के साथ कूटनीतिक एवं राजनयिक सम्बन्धों को स्थापित करना होगा।

lkfgR; dk iquoZyksdu&

ik.Ms;] ¼1991½

;q) ,oa vrjkZ"Vªh; lEcU/k % Hkkjrh; lqj{kk esa usiky dk egRo

बाबू राय पाण्डेय ने अपनी पुस्तक युद्ध एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध में कहा है कि सन् 1962 के बाद से चीन, नेपाल में अपना प्रभाव बढ़ाने का प्रयत्न कर रहा है। नेपाल के प्रति चीन के इरादे साफ नजर नहीं आते हैं। माओ भी यह कहता है कि नेपाल व भूटान चीन–भू भाग के ही अंग है। इस प्रकार चीन नेपाल में अपनी उपस्थिति को दर्ज कराना चाहता है। इससे भारत को अनेकानेक चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।

नेपाल द्वारा तराई क्षेत्रों में चीनी परियोजनाओं की स्वीकृति से भारतीय सुरक्षा निश्चित रूप से प्रभावित होगी। भारत नेपाल सीमा पर तस्करों की बढ़ती प्रवृत्ति जहां हमारी सुदृढ़ अर्थव्यवस्था के लिए खतरा है। वही हमारे दाऐं–बायें स्थित इस्लामिक देश (बांग्लादेश और पाकिस्तान) चीन और महाशक्तियों के बहकावे में आकर कभी भी हमारे लिए सिर दर्द बन सकते हैं। महाशक्तियों की दक्षिण एशिया में रूचि के कारण भारतीय सुरक्षा में नेपाल के महत्व को और भी बढ़ा दिया है।

अतः भारत को नेपाल की हर दृष्टि से सहायता करके उसे शक्तिशाली व समृद्धशाली बनाना होगा जिसके कारण वहाँ कभी भी राजनैतिक अस्थिरता उत्पन्न न हो सके और न ही बाह्य शक्तियों को हस्तक्षेप का अवसर मिल सके।

Uneasy Friends, 2001, Readings on Indo-Nepal Relations, Upreti,

उप्रैती 2001 ने अपनी पुस्तक Uneasy Friends, Readings on Indo-Nepal Relations में भारत–नेपाल के सुरक्षात्मक सम्बन्धों पर विचार व्यक्त करते हुए कहा है विदेश नीति पर राष्ट्र सम्बन्धों का आधार होती है जिसमें कि हम देखते हैं कि नेपाल–भारत के सम्बन्ध कूटनीतिक सुरक्षा की दृष्टि से आवश्यक और महत्वपूर्ण है। भारत की सुरक्षा को अनेक आन्तरिक एवं बाह्य कारक प्रभावित करते हैं। ब्रिटिश काल से ही उत्तर में भारत की सुरक्षा का प्रहरी हिमालय रहा है। भारत को नेपाल के प्रति भी उस समय अपनी विदेश नीति का निर्माण करना पड़ा जब शीतयुद्ध की राजनीति चल रही थी ओर चीन एक उभरती शक्ति के रूप में उदित हो रहा था। उन्होंने यह भी बताया कि नेपाल की एक स्थायी राजनीतिक व्यवस्था होनी चाहिए और आर्थिक सामाजिक विकास भी होना चाहिए। भारत के साथ नेपाल के सम्बन्धों को बढ़ाने की नीति में उन्होंने कुछ कारण बताये जो कि जिम्मेदार है। नेपाल के चीन से सम्बन्ध और शीत युद्ध के अन्त की राजनीति, स्थिरता और विकास ये सभी महत्वपूर्ण मुद्दे है जो कि अभी तक बने हुए हैं।

Jayapalan (2001)

Foreign Policy Of India

Jayapalan 2001 ने अपनी पुस्तक Foreign Policy Of India में भारत–नेपाल सम्बन्धों पर विचार व्यक्त करते हुये कहा है कि दोनों देशों में

अनेकानेक समानता हैं जो कि विश्व में अन्य किसी देश में नहीं हैं। जैसे धर्म खान–पान, पहनावा, भाषा इन सभी समानताओं के कारण भारत ने नेपाल के प्रति मैत्रीपूर्ण व सहयोगात्मक सम्बन्ध रखे। लेकिन 1962 के युद्ध के पश्चात भारत ने महसूस किया कि नेपाल का रूझान चीन की ओर बढ़ रहा है अगर नेपाल–चीन के प्रभाव में आता है तो वह निश्चित रूप से भारत के लिए खतरा होगा इससे भारत की सुरक्षा प्रभावित होगी।

pkSgku ¼2010½

Hkkjr vkSj usiky ds lkefjd lEcU/k ¼lu~ 1950 ls vc rd½

ने अपनी पुस्तक भारत और नेपाल के सामरिक सम्बन्ध में भारत–नेपाल के सम्बन्धों पर विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि भारत–नेपाल सम्बन्धों का प्रारम्भ सुखद एवं मैत्रीपूर्ण तरीके से हुआ, इसका उदाहरण हम 1950 की शांति एवं मैत्री संधि को ले सकते हैं। उसके बाद सम्बन्ध परिवर्तन का युग (1956–62) आया। इस चरण में सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन नेपाल का चीन की ओर झुकाव था। इसी कारण 1961 को नेपाल चीन समझौते के आधार पर चीन ने नेपाल को ल्हासा तक सड़क निर्माण करने हेतु आर्थिक सहायता प्रदान की। नये दृष्टिकोण का प्रारम्भ (1963–71) हुआ। इसी समय भारत के राजनेताओं द्वारा इस कार्यकाल में की गयी यात्राओं से लगाया जा सकता है। प्रत्युत्तर में नेपाल के शासकों द्वारा भी यात्राएं भी की गयी थीं। 1972 से 1979 तक सामान्य सम्बन्ध, परन्तु मतभेद भी रहे हैं। इस काल का सबसे विवादास्पद विषय नेपाल को ‘शान्ति क्षेत्र’ घोषित करना रहा।

1980–2010 तक भारत नेपाल सम्बन्धों में उतार–चढ़ाव तो रहे, परन्तु सुखद स्थिति अधिक रही है। उन्होंने यह भी बताया कि भारत व नेपाल के बीच मौजूद रक्षा, राजनीतिक और समन्वय अति आवश्यक है। वर्तमान में दोनों देशों के सम्बन्ध मधुर हैं।

i:lkn ¼2010½

dVuhfr ,oa 'kfDr % Hkkjr&usiky dk /kkfeZd lEcU/kksa dh leh{kk

प्रसाद देव कुमार ने भारत–नेपाल सम्बन्धों को धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक संदर्भ को महत्वपूर्ण बताया है। विश्व का एकमात्र हिन्दू राष्ट्र नेपाल है। जो भारत से धार्मिक, अध्यात्मिक, नैतिक व सांस्कृतिक मूल्यों में समानता रखता है। भारत ने नेपाल को हमेशा सभी प्रकार की सहायता प्रदान करता रहा है। भगवान बुद्ध की जन्मस्थली नेपाल रही। कपिलवस्तु व लुम्बनीवन जैसे तीर्थ स्थलों पर आज भी अधिकतर भारतीय पहुँचते हैं। त्रेता युग में यानि रामायण काल में जानकी के पिता राजा जनक नेपाल स्थित जनकपुर के नरेश थे। द्वापर युग में यानी महाभारत काल में पांचों पाण्डव ने नेपाल स्थित विराटनगर में ही अज्ञातवास बिताया था।

i|"i:'k iUr ¼2010½

21वीं सदी में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, टाटा मैक्ग्रा हिल सीरीज, पृ0सं0 207

उन्होंने भारत नेपाल सम्बन्धों पर विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि भारत नेपाल ऐसे पड़ौसी देश है जो कि बहुत करीब है। नेपाल ऐसी विदेशी राष्ट्र जिसके नागरिक भारतीय सेना में भर्ती किये जा सकते हैं। हिमालय पर्वत माला और अनेक महत्वपूर्ण नदियों भारत व नेपाल के बीच साझे की सम्पत्ति है। नेपाल विश्व का एकमात्र हिन्दू राष्ट्र है और महात्मा बुद्ध की जन्मभूमि भी है। इन पारस्परिक और सांस्कृतिक सम्बन्धों और अन्य वैवाहिक सम्बन्ध सदियों से पुष्ट करते रहे हैं। आजादी के बाद भारत नेपाल के सम्बन्धों में मतभदे के अनेक मुद्दे भी खड़े हो गये हैं।

fugkj uk;d ¼tqykbZ 2011½

The Madhesi Movement in Nepal: Implication for India, Strategic Analysis

उन्होंने अपने लेख में नेपाल की एक मधेश जाति के बारे में बताया है जो कि नेपाल के तराई क्षेत्र में पाई जाती है। जिसके कारण वहाँ पर भाषायी व जातीय समस्याऐं उत्पन्न होती हैं जो कि नेपाल की राजनीतिक परिवेश पर प्रभाव डालती है इस प्रकार भारत नेपाल का पड़ोसी देश होने के नाते उन परिस्थितियों पर भी प्रभाव डालता है।

lrh'k dqekj ¼vi{y 2011½

China] Expanding Footprint in Nepal: Threats to India, Journal of Defence Studies

उन्होंने भारत नेपाल सम्बन्ध पर टिप्पणी करते हुये कहा है कि नेपाल, भारत की सीमा सुरक्षा को प्रभावित करता है और चीन नेपाल पर दृष्टि टिकाये हुये हैं। वह अपनी विस्तारवादी नीति से अपने भूभाग का विस्तार करने में लगा हुआ है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हम देख सकते हैं जब चीन ने तिब्बत को बलपूर्वक घेर लिया।

iqf"irk nkl ¼2012½

Drug Trafficking in Inda: A case for Border Security, IDSA Occasional Papers

उन्होंने भारत में नशीले पदार्थों की जो गुप्त रूप से आवाजाही होती है उसमें नेपाल की सक्रिय भूमिका बतायी है जिसे रोकना बहुत आवश्यक है। भारत ने उसे रोकने के लिए समुद्री तटों और वायु मार्गों की सुरक्षा को बढ़ाया है और जिसमें कि भारत के अनेक ऐच्छिक संगठन भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

gjo'k >k ¼ekpZ 2013½

Nepal India Cooperation in Reiver Water Management, Strategic Analysis

उन्होंने भारत नेपाल सम्बन्धों पर टिप्पणी करते हुए कहा कि यह प्रत्यक्ष रूप से देखा गया है कि नेपाल ने भारत के साथ तीन मुख्य समझौते किये जिनके नाम है कोसी समझौता, गण्डक सन्धि एवं महाकाली सन्धि आदि है परन्तु उनमें नेपाल ने अपनी तरफ से कोई विशेष योगदान नहीं दिया न ही कोई और विशेष धनराशि दी है।

}kfjdk ,u0 /kqxy

नेपाल भारत सम्बन्धः कूटनीतिक विफलता, पूर्व सचिव, नेपाल सरकार

उनके अनुसार भारत और नेपाल बहुत ही अच्छे तरीके से जुड़े हुये हैं। भारत ने विशेष रूप से लोकतांत्रिक प्रणाली की स्थापना में नेपाल के राजनीतिक घटना क्रम में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। उसकी स्वतंत्रता आंदोलन में भी भारत ने विभिन्न क्षेत्रों में काफी योगदान दिया है। उन्होनें भारत और नेपाल के आर्थिक सम्बन्धों को भी घनिष्ठ बताया है।

उपर्युक्त साहित्य समीक्षा से निष्कर्ष निकलता है कि नेपाल भारत सरकार में भौगोलिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक रूप से घनिष्ठता है। प्रस्तुत शोध में उपयुक्त बिन्दुओं का आधुनिक सन्दर्भ में अध्ययन किया जायेगा तथा अन्य समस्याओं का अध्ययन किया जायेगा।

mn~ns';%&

1. भारत और नेपाल के सम्बन्धों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (1950 की शांति एवं मित्रता संधि) का अध्ययन करना।

2. भारत वे नेपाल के सम्बन्धों को प्रभावित करने वाले सामरिक कारकों का अध्ययन करना।
3. भारत नेपाल सम्बन्धों में चीन की भूमिका का अध्ययन करना।
4. सन् 2000 से वर्तमान तक भारत—नेपाल सम्बन्धों की प्रकृति का अध्ययन करना।
5. भारत—नेपाल के सम्बन्धों में सुधार से सम्बन्धित सुझाव प्रस्तुत करना।

ifjdYiuk

1. भारत—नेपाल के मध्य 1950 की संधि का दोनों देशों के सम्बन्ध पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा।
2. भारत—नेपाल सम्बन्धों को प्रभावित करने में सामरिक सम्बन्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
3. भारत—नेपाल सम्बन्धों को चीन की भूमिका ने इस प्रकार प्रभावित किया गया है।
4. सन् 2000 से वर्तमान तक भारत—नेपाल सम्बन्ध परिवर्तनशील हो रहे हैं।

v/;;u i)fr

प्रस्तुत अध्ययन विश्लेषणात्मक और वर्णनात्मक है। प्रस्तुत अध्ययन में द्वितीय स्त्रोतों का प्रयोग किया जायेगा, जिसमें प्रमुख रूप से समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, शोध पत्रिकाओं, पुस्तकों, इण्टरनेट, मौखिक इतिहास इत्यादि है।

vu|ekfur v/;k;

iFke v/;k;

1. प्रस्तावना
2. समस्या कथन
3. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन
4. उद्देश्य
5. परिकल्पना
6. अध्ययन की पद्धति
7. अध्ययन का महत्व

f}rh; v/;k; & Hkkjr&usiky lEcU/k % ,frgkfld i"BHkfe ¼1950 dh 'kkfr ,o fe=rk lf/k½ dk iHkko dk v/;;u djukA

द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत हम भारत–नेपाल सम्बन्धों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करेंगे। इसके साथ ही हम 1950 की शांति एवं मित्रता संधि के प्रभाव का अध्ययन करेगें।

rrh; v/;k; & Hkkjr usiky lEcU/k % iHkkfor djus oky lkefjd dkjd

इस अध्याय के अन्तर्गत हम भारत नेपाल सम्बन्धों को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करेंगे।

prFk v/;k; & Hkkjr usiky lEcU/k % phu dh Hkfedk

इस अध्याय के अन्तर्गत हम चीन की भूमिका के कारण भारत नेपाल सम्बन्धों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करेंगे।

ipe v/;k; & 2000 ls orleku rd Hkkjr&usiky ds jktuhfrd lEcU/k % okLrfod fLFkfr

इस अध्याय के अन्तर्गत हम भारत नेपाल सम्बन्धों की वास्तविक स्थिति एवं सम्बन्धों का अध्ययन करेगें।

"k"B v/;k; & fu"d"k ,o lq>ko

इस अध्याय में प्रस्तुत सभी अध्यायों का विश्लेषण करके उनका संक्षिप्त सारांश प्रस्तुत करेगें। यह अध्याय साथ में ही शोध के निष्कर्ष और भारत–नेपाल सम्बन्धों के परिपेक्ष्य में सभी मुद्दों एवं विषयों का तार्किक चिन्तन करके अध्ययन करेंगे।

lUnHkZ xzUFk lwph

1- पाण्डेय, डॉ0 बाबूराम (1991) : युद्ध एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, प्रकाश बुक डिपो, बरेली, पृ0सं0 39–42

2. Unpreti B.C. (2001), Uneasy Friends, Reading on Indo-Nepal Relations, Kalings Publication, Delhi, P.No. 4-6

3- Jayapalan N. (2001) Foreign Policy of India, Atlantic Publishers and Distrubutors B-2, Vishal Enclave, New Delhi-27 page no. 401-408

4- चौहान राजीव कुमार (2010), भारत और नेपाल के सामरिक सम्बन्ध (सन् 1950 से अब तक), आकृति प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0सं0 144, 145, 149, 160

5- प्रसाद, देव कुमार (2010) : कूटनीति एवं शक्ति, राकेश कुमार द्वारा, प्रकाशक देव कुमार प्रसाद, बिहार, पृ0सं0 72–76

6- पंत, पुष्पेश (2012) 21वीं शताब्दी में अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, टाटा मैक्ग्रा हिल्स सीरीज, पृ0सं0 260

7. क्रोनिकल पत्रिका (मई 2013), अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य, सिविल सर्विसेज, क्रोनिकल, एस0डी0ए0 कामिर्शियल काम्पलैक्स, नई दिल्ली, पृ0सं0 30

8. खन्ना बी0एन0 और अन्य भारत की विदेश नीति, दिल्ली विश्व विद्यालय, दिल्ली, पृ0सं0 181, 82, 96, 97

9. चौरसिया, राधेश्याम (2001) अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध (1914–1950) अटलांटिक पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ0सं0 409

10. दत्त बी0पी0 (2003) : बदलती दुनिया में भारत की विदेश नीति, प्रकाशक : हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्व विद्यालय, पृ0सं0 253

11. दत्त बी0पी0 (2011) : स्वतंत्र भारत की विदेश नीति, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, पृ0सं0 39–40

12. पंत, पुष्पेश (2010) भारत की विदेश नीति, टाटा मैक्ग्रा हिल्स सीरीज, पृ0सं0 2.5

13. सिंघल, डॉ0 सुरेश चन्द्र (2011) भारत की विदेश नीति, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, पृ0सं0 211–214

14. सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकारी (2013), वार्षिक संदर्भ ग्रन्थ, गवेषणा, संदर्भ और प्रशिक्षण प्रभाग द्वारा संकलित, पृ0सं0 488, 489

15. सिंह रहीस (2013) : वैश्वि सम्बन्ध, किडंरस्ले (चंडीगढ़, इंडिया) प्रा0लि0, पृ0सं0 93–94

16- शर्मा, मथुरा लाल, अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, त्रिपोलिया, पब्लिकेशन जयपुर, 2006

17. Bahadur, Kalim (2004), "Indian Foreign Policy in a Changing World", World Focus, 25(10):3-6.

18. Baral, L.R (1982), "Triangular Relations", Seminar, June, Delhi.

19. Baral, Lok Raj (ed.) (1996) "Looking to the Future: Indo-Nepal Relations in Perspective", New Delhi: Anmol Publications.

20- Bhashim, A.S. (1970), Document on Neptal, Relations with India and China, Aisa Publication, Bombay, P.No. 23

21. Bhattacharya, G.P. (1970), India and Politics of Modern Nepal, Calucutta: Minerva.

22. Chhibber, Bharti (2009), "India-Nepal Relations in Contemporary Times", World Focus, 15 (9): 539-544.

23. Government of India (2010), Annual Report, 2009-10, Minsitry of External Affairs, New Delhi

24. Government of India (2010), India- 2010, Minsitry of Information and Boradcasing, Publication Division, New Delhi

25. Himal (2005) Journal September 2005, www.himalmag.com

26. Jha, Shankar Kumar (1989), Indo-Nepal Relations, New Delhi: Archives books, P.No. 9

27. Jha, Shree Krishna (1975), Uneasy Partners: India Na Nepal in Post Colonial Era, new Delhi: Manas Publications.

28. Muni, S.D. (2009), India's Foreign Policy, Democracy Dimension, New Delhi, CUP.

29. Nehru, Jawaharlal (1961), India's Foreign Policy: Selected Speeches, Publication Division, Ministry of Information and Broadcasting, Govermment of India.

30. Pandey, D.C. (1988), Indian Foreign Policy, New Dimension and Directions, Consul for Gyanodaya Prakashan, Sumitras Sadan Nainital, U.P., P.No. 157-158

31. Ramakant (1968), Indo-Nepalese Relations, 1816 to 1877, Delhi: S.Chand

32. Ramakant (1976), Nepal, China and India Nepal-China Relations New Delhi: Abhivav.

33. Ramakant and M.D. Dharamdarsani (1980), "India's Attitude towards Nepal" in S. Chopra (ed.) Studies in India's foreign Policy, Amritsar: Guru Nanak Dev University, 82,83

34. Speech of President Rajendra Prasad (1952-56), Publication Deivsion, Government of India, New Delhi.

35. Upadhyaya, S.K. (1991), India-Nepal Relations, New Delhi: Vikas Publishing House.

36. World focus, Monthly Discussion Jopurnal, May 2006, Delhi, P.No. 13, 14, 15, 22